भारत भूषण आर्य

तुम क्या जानो सागर को क्या सागर की गहराई है
बैठ किनारे कहते रहते किश्ती पार लगाई है

गाजे-बाजे, मेले-ठेले, खेल-तमाशे आख़िर क्या
पल दो पल का जश्न है प्यारे फिर पीछे तन्हाई है

प्यार की ऊँची-ऊँची बातें पल- पल करती है दुनिया
फिर नफ़रत कैसे उग आई सोच में रात बिताई है

बारिश से बचकर रहते हो भीग न जाए जिस्म कहीं
उसकी सोचो जो है बेघर हर दिन एक लड़ाई है

सागर गहरा लेकिन कितना उनकी आँखों के आगे
हमने देखी हैं वो आँखें तब ये बात उठाई है

होकर उनसे बात हज़ारों हाय! कहाँ वो बात हुई
जाने किसने लब से मेरे दिल की बात चुराई है

इश्क़ का मतलब क्या है आख़िर इश्क़ करो तो जानो तुम
इश्क़ है पूजा, इश्क़ ख़ुदा है, इश्क़ मियाँ सच्चाई है

बातिल को बातिल कहने का आख़िर ये अंजाम हुआ
वक़्त से पहले इस दुनिया में अपनी जान गँवाई है

अपनी -अपनी नज़्म सुनाकर "भूषण जी" सब दूर हुए
किसने सुनी है नज़्म तुम्हारी रस्मन रीत निभाई है

हार के जीती,जीत के हारी, इश्क़ की ऐसी बाज़ी है
बाक़ी तो बाज़ार है प्यारे दुनिया कारोबारी है

रात को जगना, दिन में सोना, आख़िर ऐसा हुआ है क्या
क़ैस की मानें तो क्या तुमको दिल की लगी बीमारी है

अच्छा छोड़ो, ये बतलाओ दुनिया में क्या काम किया
ऐब भी पाले तुमने कुछ या यूँ ही ज़ीस्त गँवाई है

गाँव भी छोड़ा, शह्र भी छोड़ा, उनकी गली भी छोड़ चले
ऐ दुनिया हमको बतला दे और क्या करना बाक़ी है

सिखलाते हैं वो ही हमको जीने के क्या तौर यहाँ
काट के पर्वत जिनकी खातिर हमने राह बनाई है

धरती चपटी, धरती तिरछी, कहते हैं वो मान भी लो
पूछा कैसे तो फिर जानो झट से जान गँवानी है

मैं भी जानूं, तू भी जाने, ये भी जाने, जाने वो
मौत हमेशा सर पर नाचे बोलो क्या तैयारी है

ईस्ट आज़ाद नगर, दिल्ली

ISSN:2583-8849